

डॉ. अगस्त कोकेल, क्रॉनिकल्स, सत्र 16, संघर्षशील राज्य

© 2024 गस कोकेल और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. ऑगस्ट कोकेल द्वारा इतिहास की पुस्तकों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र संख्या 16 है, संघर्षशील राज्य।

इतिहासकार ने हमारे सामने सुलैमान के राज्य को शांति के राज्य के रूप में प्रस्तुत किया है।

वह वह है जो ईश्वर के शासन के आदर्श का प्रतिनिधित्व करता है। और इसलिए इतिहासकार की प्रस्तुति हमें यह बताने के लिए है कि ईश्वर यही चाहता है और यही चाहता है। चीजों की वास्तविक वास्तविकता हमेशा वह नहीं होती जो हम आदर्श के रूप में चाहते हैं।

वास्तव में, यह अक्सर वैसा नहीं होता जैसा हम चाहते हैं कि आदर्श हो। जैसा कि इतिहासकार के पाठक अच्छी तरह जानते थे, और जैसा कि हम सुलैमान की कहानी पढ़कर अच्छी तरह जानते हैं, उसका शासन शांति से समाप्त नहीं हुआ। यह वास्तव में बहुत संघर्षपूर्ण तरीके से समाप्त हुआ, जिसके परिणामस्वरूप राज्य विभाजित हो गया।

इतिहासकार ने कभी भी स्पष्ट रूप से राज्य के विभाजन का उल्लेख नहीं किया है, हालाँकि स्पष्ट रूप से, उसके सभी पाठकों को यह पता होना चाहिए कि यह हुआ है ताकि वे आने वाले शासनकाल के बारे में उसकी प्रस्तुति को समझ सकें। लेकिन उसके तुरंत बाद के शासनकाल उन संघर्षों को दर्शाते हैं जो विकसित हुए थे। इतिहासकार ने उनका उपयोग यह दिखाने के लिए भी किया है कि कैसे खुद को नम्र बनाना और ईश्वर का चेहरा ढूँढ़ना उसकी दया को बनाए रखेगा और आपको उसकी दया का अनुभव करने में सक्षम करेगा।

लेकिन इस बिंदु से आगे, सुलैमान के बाद, हमारे पास वास्तव में एक या दूसरे तरीके से संघर्षरत राजाओं की कहानी है। और यद्यपि इतिहासकार इनमें से कुछ राजाओं को बहुत पसंद करता है, वस्तुतः उनमें से सभी एक या दूसरे प्रकार की असफलताएँ रखते हैं, और अक्सर बहुत बड़ा संघर्ष होता है। और इतिहासकार यह स्पष्ट करता है कि उत्तर में इस्राएल, अक्सर दक्षिण में यहूदा के साथ युद्ध में था, ठीक उसी तरह जैसे हम राजाओं में पाते हैं।

तो, इतिहास की पुस्तक में हमारा अगला खंड सुलैमान से लेकर हिजकिय्याह के समय तक का समय है। इस समय अवधि में अशूरियों द्वारा उत्तर का निर्वासन शामिल है, जिसका उल्लेख इतिहासकार ने अपने काम में पहले किया है, लेकिन यहाँ स्पष्ट रूप से उल्लेख नहीं किया है। और फिर यह इस बारे में भी बात करता है कि यहूदा में किस तरह से चीजें बिगड़ गईं, आहाज के समय तक, जब मंदिर पूरी तरह से अपवित्र हो गया।

लेकिन अब हम सुलैमान के बाद आने वाले पहले दो राजाओं पर नज़र डालना चाहते हैं। इतिहासकार सिर्फ यहूदा के राजाओं पर ध्यान केंद्रित करने जा रहा है। बेशक, यहूद किसी न

किसी तरह से यरूशलेम का प्रतिनिधित्व करता था और यरूशलेम के राजाओं का प्रतिनिधित्व करता था।

इसलिए, इतिहासकार यरूशलेम में मंदिर के स्थान के रूप में रुचि रखते हैं जहाँ भगवान की पूजा की जानी है और जहाँ उनके राज्य का प्रतिनिधित्व किया जाना है। और इसलिए, यहाँ, अध्याय 10 से शुरू होकर, राजशाही के विभाजन और यारोबाम की वापसी की मान्यता है। जैसा कि हमने उल्लेख किया है, यारोबाम अपनी सुरक्षा के लिए मिस्र भाग गया था क्योंकि वह सुलैमान के साथ संघर्ष में था।

इतिहासकार ने इनमें से किसी का भी उल्लेख नहीं किया है, लेकिन इतिहासकार ने इस तथ्य का उल्लेख किया है कि यारोबाम वापस लौटता है और यहाँ उत्तर की ओर से दाऊद की पुष्टि को पलट दिया गया है। याद रखें कि इतिहासकार ने सभी योद्धाओं के साथ दाऊद के सामने पेश होकर कहा था, हे दाऊद, हम तुम्हारे हैं और हमारा भविष्य तुम्हारे हाथ में है। खैर, यहाँ, उत्तर की ओर से आने वाली सभी जनजातियाँ इसके विपरीत कह रही हैं।

सुलैमान के अधीन उनका अनुभव कठोर हो गया है, और वे कह रहे हैं, दाऊद में हमारा क्या हिस्सा है? दाऊद में हमारा क्या भविष्य है? यरूशलेम में हमारा क्या भविष्य है? तो, इस अर्थ में, मंत्र उलट गया है। हमने पहले भर्ती किए गए श्रम का उल्लेख किया था, और उस भर्ती किए गए श्रम का प्रभारी व्यक्ति हदोराम था। इसलिए, सुलैमान के उत्तराधिकारी के रूप में अपना शासन स्थापित करने की चाह में, रहूबियाम शेकेम गया था।

उत्तरी जनजातियों को अपनी बात मनवाने के लिए वह एक बड़ा केंद्रीय शहर था। लेकिन जैसा कि हम कहानी जानते हैं, वे कराधान के स्तरों से बहुत असंतुष्ट थे, विशेष रूप से अनिवार्य श्रम के तथ्य से। आप जानते हैं, मैं कराधान के बारे में बहुत शिकायत करता हूँ।

मुझे कभी-कभी कहा जाता है कि मुझे आभारी होना चाहिए कि मैं करों का भुगतान कर सकता हूँ क्योंकि इसका मतलब है कि मेरी कुछ आय है। इसका यह भी मतलब है कि मुझे इन करों से शायद कुछ लाभ भी मिलता है। और मुझे एहसास है कि ये बातें सच हैं।

लेकिन कर आय के अनुपात से असंगत प्रतीत होते हैं, कम से कम मेरे मामले में तो ऐसा ही है। और मुझे नहीं लगता कि लाभों का उपयोग उस तरह से किया जा रहा है जैसा मैं चाहता हूँ। लेकिन यह वैसा कुछ भी नहीं है जैसा कि ये लोग अनुभव कर रहे थे, जिसमें आप वास्तव में अपना काम और अपनी आजीविका कमाने की कोशिश छोड़कर सीधे सरकार के लिए उनके विशेष प्रोजेक्ट में काम करने चले जाते हैं।

यह 100% कराधान है, जो कि मैंने कभी अनुभव नहीं किया है। और बेशक, यह साल के सिर्फ एक हिस्से के लिए हो सकता है, लेकिन यह फिर भी बोझिल है, बहुत बोझिल, भले ही यह 12 में से तीन महीने ही क्यों न हो, यह बोझिल है। और इसलिए इस कराधान का बहुत विरोध हुआ।

और जब रहूबियाम ने फैसला किया कि वह कर लगाना जारी रखेगा, वास्तव में, शायद कर को सुलैमान के बराबर बढ़ा देगा, तो पूरी तरह से विद्रोह हो गया। और अदोराम को पत्थरवाह किया गया। और, ज़ाहिर है, युद्ध होता।

लेकिन यहाँ इतिहासकार हमें एक भविष्यवक्ता के बारे में बताता है, उसका नाम शमायाह है। और भविष्यवक्ता, अपने भाषण में, इस्राएल के साथ युद्ध को टालता है, क्योंकि वह उन्हें याद दिलाता है कि वे भाई हैं। इसलिए, इस समय राज्य के आवश्यक विभाजन के साथ, रहूबियाम केवल यहूदा में राजा है।

लेकिन यहूदा में राजा के रूप में, इतिहासकार के पास उसके बारे में कहने के लिए बहुत कुछ है कि उसने किस तरह से शहरों को मजबूत किया और किस तरह से उसे एक बड़े घराने का आशीर्वाद मिला। इसलिए, हालाँकि, एक अर्थ में, रहूबियाम राज्य के विभाजन के लिए जिम्मेदार है, जैसा कि हम देखने जा रहे हैं, इतिहासकार रहूबियाम की तुलना में यारोबाम को उस विभाजन के लिए अधिक जिम्मेदार मानता है। हम इसे विशेष रूप से रहूबियाम के उत्तराधिकारी, अबियाह के शासनकाल में देखते हैं।

यहाँ हम देखते हैं कि इस्राएल और यहूदा के बीच फिर से युद्ध छिड़ने वाला है। जैसा कि हम राजाओं की पुस्तक से जानते हैं, यह रहूबियाम और नबात के बेटे यारोबाम के बीच राज्य के विभाजन के बाद की एक तरह की घटना थी। लेकिन यहाँ हमें राजा का भाषण मिलता है।

यह इतिहास की पुस्तक, अध्याय 13, श्लोक 4 से 12 में सबसे महत्वपूर्ण भाषणों में से एक है। क्योंकि राजा अबियाह वास्तव में परमेश्वर के आदर्श और परमेश्वर क्या चाहता है, के विकल्पों को सामने रखता है। इसलिए इसे राजनीतिक भलाई तक सीमित नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि इसे वादों पर वापस आना चाहिए और परमेश्वर अपने राज्य के लिए क्या चाहता है, इस पर वापस आना चाहिए।

और इसलिए, वह कहता है कि लापरवाह बदमाशों ने अनुभवहीन रहूबियाम पर विजय प्राप्त की। अब, इस अंश को वास्तव में दो तरीकों से पढ़ा गया है, क्योंकि यह थोड़ा अस्पष्ट है। लापरवाह बदमाशों ने किस पर विजय प्राप्त की? क्या उन्होंने रहूबियाम पर विजय प्राप्त की या उन्होंने यारोबाम पर विजय प्राप्त की? इतिहासकार यह कहते हुए प्रतीत होता है कि वास्तव में यहाँ जो हुआ वह यह था कि रहूबियाम अनुभवहीन था।

उसे यह एहसास नहीं था कि उसे इस कर-निर्धारण के सवाल को कैसे संभालना है। उसके अनुभवहीनता का नतीजा यह विभाजन था। यारोबाम उस विभाजन के लिए जिम्मेदार है क्योंकि उसने इस स्थिति का फ़ायदा उठाकर खुद को उत्तर में राजा बना लिया।

तो, यहाँ वास्तव में सुलह का अवसर था, लेकिन यारोबाम ने अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं में, इस्राएल और उत्तर की जनजातियों पर अपनी शक्ति का पीछा किया। तो, हमारे पास जो है वह यारोबाम का न्याय है। दक्षिण का राजा अबियाह अपनी उत्तरी सीमाओं को बहाल करने में सक्षम है।

और उत्तरी सीमाएँ, बेशक, आमतौर पर बेथेल द्वारा दर्शाई जाती हैं, बेथेल के आसपास का वह क्षेत्र, जो यरूशलेम के उत्तर और पश्चिम में थोड़ा सा है। इसने दो राज्यों के बीच विभाजन रेखा बनाई। अबियाह ने उन सीमाओं को बहाल किया, और यारोबाम न्याय में मर गया।

और इसलिए अबियाह उन राजाओं में से एक बन जाता है, जो इतिहासकारों के अनुमान के अनुसार, अनुकरणीय है। वह जिस तरह से हस्तक्षेप करता है, जिस तरह से वह दो राष्ट्रों के बीच युद्ध को रोकता है और जिस तरह से वह यहूदा के शासन और यहूदा के क्षेत्र को सुरक्षित रखता है, उसके संदर्भ में अनुकरणीय

है। यह डॉ. ऑगस्ट कोकिल द्वारा इतिहास की पुस्तकों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र संख्या 16 है, संघर्षशील साम्राज्य।